बिआस किनारे

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस कहे याद आया मंडी मेरे विच्च गोबिन्द धोया भथ्था, पाणी पंज वेरां आप हिलाईआ। तेरां दा सी नाल जत्था, गुरमुख संग लिआईआ। मैनूं उठा के सुणाऐ कथा, शब्दी हुक्म दृढ़ाईआ । उठ प्यारे दुलारे प्रभ दे बच्चा, बचपन तेरा दिआं समझाईआ। चार जुग तेरा खेल होया कच्चा, इट्टां पत्थरां नाल टकराईआ। आ अमृत पी रता, सज्जे हत्थ दी उंगली दित्ती चटाईआ। फेर चुक्क के उत्ते पट्टां, हत्थ छाती उत्ते रखाईआ। घास दा पुट्ट के गट्टा, मेरे विच्च दिता रुड़्हाईआ। उँनी उंगलां दा फट्टा, सैहजे दिता टिकाईआ । अद्ध विचकारों फड़ के कट्टा, खण्डा दिता छुहाईआ। एह खेल मैनूं लग्गा अच्छा, वेख खुशी मनाईआ । गोबिन्द फड़ के आपणा भथ्था, मेरे उत्ते दित्ता हिलाईआ। मेरीआं खुल्ह गईआं अंदरों बाहरों अक्खां, दो जहान नज़री आईआ। बिना पुरख अकाल मिल्या कोई ना सखा, कूड़ी दिसी जगत लोकाईआ। मैं जोड़ के दोवें हत्थां, बन्दना चरन लई कराईआ। कुछ दस्स अगला पता, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द खुशीआं नाल हस्सा, सज्जा चरन तिन्न वार पत्थर नाल टकराईआ । ओसे वेले वगण लग्गा ठग्गका, हवा पाणी ज़ोर लगाईआ। निरगुण धार पुरख अकाल आया नट्ठा, जोती जाता फेरा पाईआ। जिस दे कोल चार जुग दे लेख दा पटा, हिस्से गुर अवतार पैगम्बरां रिहा वखाईआ । निशाना बिन कागज़ नज़र आया चिट्टा, शाही वंड ना कोई वंडाईआ । ब्रह्मण्डां खण्डां नालों लंमा चिठ्ठा, जे हड़ा सैहजे दित्ता जणाईआ। मैं हो के हक्क़ा बक्का, हत्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ । गोबिन्द सैहजे मैनूं लाया धक्का, ढाई कदम अग्गे दित्ता वधाईआ। जिथ्थे विछी अगम्मी सफ़ा, जिस दी बणत ना कोई बणाईआ। पुरख अकाल दिसिआ पिता, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। वडिउँ वड्डा निक्कयों निक्का, दोवें धारा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप समझाईआ।

बिआस कहे मैं धक्का खाधा ढाई कदम, हुलार समझ कोई ना आईआ। मेरा कम्ब गया बदन, सुरती अंदरों सुरत भवाईआ। मैं हत्थ लग्गा मल्लण, आपणे आप पछताईआ। नेत्र हन्झ लग्गा किरन, मोती छहिबर लाईआ। मैं परदक्खणा, विच्च लग्गा फिरन, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। पुरख अकाल जोत दी दित्ती किरन, नूर कीता रुशनाईआ। ओधरों साढे तिन्न साल दा बच्चा आया हिरन, रंग सुनहिरी रूप वटाईआ। गोबिन्द डिग्गा आ के चरन, सीस सोहणा दित्ता झुकाईआ। मैं ओस नाल लग्गा लड़न, गुस्सा मेरे अंदर आईआ। मैं इस दी तक्की सरन, एह मेरा धुरदरगाहीआ। दूजा एथे कोई नहीं देणा वड़न, एह मेरी वडयाईआ। आपणे विच्चों कोई नहीं देणा तरन, डूंघे वहण दिआं वहाईआ। गोबिन्द किहा मैं करनी दा करन, करते दा हुक्म दिआं समझाईआ। गोबिन्द प्रेमी सारे तरन, तेरी चल्ले ना कोई चतराईआ। साची मंज़ल मेरी चढ़न, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, धुर दा राग अलाईआ। बिआस कहे मैं विचे विच्च लग्गा सड़न, अगनी मेरे अंदर आईआ। ओधरों भज्जा आ गिआ देवता वरुन, निउँ निउँ लागे पाईआ। ओधरों अमृत मेघ झिरना लग्गा झिरन, बादल घनघोर रहे वरवाईआ। ओधरों शंकर कैलाश उत्तों लग्गा रिड़्हन, नट्ठया वाहो दाहीआ। मैं ओनूं वेख के लग्गा चिढ़्न, तबीअत लई बदलाईआ। मेरा दिल लग्गा गिरन, हौसला रिहा ढाहीआ। उलटा गेड़ा लग्गा गिड़न, सके ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वरवाईआ।

बिआस कहे जिस वेले मेरे विच्च भथ्था धोता, आपणी हत्थीं साफ़ कराईआ। मैं जागिआ उठिआ सोता, सुरती अक्ख खुल्हाईआ। ओधरों नहावण आया खोता, उमर नौं साल वरवाईआ। ओधरों मछली मार के गोता, जल पाणी दित्ता हिलाईआ। ओधरों काफ़ले विच्चों विछड़ के आ गिआ बोता, धौण लम्मी लई कराईआ। ओधरों लक्कड़हारा हत्थ फड़ के टोका, भज्जया वाहो दाहीआ। ओधरों चौदां साल दा बुड्ढा वेख्या झोटा, अक्खां लाल कढ्ढ डराईआ। गोबिन्द सभ नूं वेख के चरनां तों लाहिआ खोसा, पैर नंगे लए कराईआ। आओ रिखीओ तुहाड्डा मेरे नाल हुण नहीं कोई रोसा, सतिजुग दे विछड़े कलिजुग अन्तम लवां मिलाईआ। प्रेम प्यार अंदर तुहाड्डे अंदर जगावां जोता, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। तुहाड्डी जन्म जन्म जन्म दी मुक्के सोचा, लक्ख चुरासी दिआं कटाईआ। दुःख भोगिआ बहुता, अंडज जेरज उत्भुज सेतज फेरा पाईआ। हुण मेरे मिलण दा मिल गिआ मौका, राम कृष्न दए गवाहीआ। साची नईआ चढ़ावां नौका, नाम जहाज़ दिआं दृढ़ाईआ। फेर ढईए दा लौणा ढौंका, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। धाहीं मारे पटणा पौंटा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरा रूप धार होवे चोटा, चोटी चढ़ के वेख वरवाईआ। चरन लग्गण ना देवां कोई खोटा, कूड़ कुड़िआरां परे हटाईआ। जन भगतां अंदर नाता जोड़ां आपणे मोह दा, मुहब्बत इक्को घर बणाईआ। झगढ़ा रहण नहीं देणा इक्क दो दा, एकंकार आपणे नाल मिलाईआ। खेल करां जोती शब्दी धार छोह दा, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। मंडी तों फ़ासला तिन्न कोह दा, गोबिन्द सैहजे गया समझाईआ। जिथ्थे प्रकाश नहीं किसे दीपक लो दा, अन्ध अन्धेरा नज़री आईआ। एहदा लेखा लिखणा जो नाता जोड़िआ छब्बी पोह दा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। बिआस कहे मेरे अंदर गुस्सा आया

रोह दा, हौका लै के दिता जणाईआ। किथ्थों मेल होया एस गरोह दा, इक्ठे कन्ढे उत्ते आईआ। गोबिन्द ओस वेले, बिआस कहे मैनूं शब्द सुणाया सोहँ सो दा, झगढ़ा अवर रिहा ना राईआ। जिस वेले चानण होवे पुरख अकाल दी लो दा, लोक परलोक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ।

बिआस कहे जिस वेले गोबिन्द भथ्था मलदा, बाहरों करे सफाईआ। ओसे वेले ब्रह्मा चलदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओधरों सूरज जांदा सी ढलदा, बारां तों बारां मिन्ट लंघाईआ। बिआस कहे मैं भरया सी जल दा, वहणां विच्च आपणा अन्त वखाईआ। इक्क हुलारा आया छल दा, सत्त हत्थ उच्चा हो के आपणी धार वगाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा एह खेल कलिजुग कल दा, कूड़ विकार तेरे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तेरे प्रेम अंदर प्यार हो के रलदा, प्रीतम हो के दिआं वडयाईआ। लेखा जाणां दीन दुनी जगत थल दा, अस्गाह पड़दे दिआं उठाईआ। कुछ शब्द संदेशा पुरख अकाल पिच्छों घल्लदा, बिआसे तैनूं दिआं जणाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी सभ नूं रिहा छल दा, उह मेरा पिता माईआ। ओस दा भाणा कदे ना टल्दा, मेरी तत्तां नालों होए जुदाईआ। मैं मालक बणना सचखण्ड दवारे अटल दा, अटल पदवी लैणी पाईआ। शब्दी धार हो के जोत विच्च रलदा, निरगुण निरगुण विच्च आपणा आप छुपाईआ। दरगाह साची रहवां पलदा, आपणा जोबन लवां वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ।

भथ्था कहे जिस वेले मैनूं लग्गी उंगल, मेरे तन लई अंगड़ाईआ। विच्चों निकली गुंझल, द्वैती डेरा ढाहीआ। मैनूं सभ कुछ लग्गा सुज्झण, अक्ख दित्ती खुल्हाईआ। अगला लेखा लग्गा बुज्झण, पड़दा दित्ता चुकाईआ। कुछ कौल इकरार कीता गोबिन्द नाल बुद्धन, बुद्धू शाह ओसे वेले सन्मुख हो के दए दुहाईआ। एस गोबिन्द ने आपणे वार जाणे पुत्तन, गुरमुख पुत्त गोद लए उठाईआ। बिआस, इक्क वेरां अकाल पुरख नूं जावे पुच्छण, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। फेर सन्त सुहेले आवे गोदी चुक्कण, भगत भगवान नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दा मेटे दुःखण, दरदीआं दर्द वंडाईआ। कलिजुग कूड़ी जड़्ह आवे पुट्टण, शौह दरया विच्च रुड़्हाईआ। ओस वेले गुरमुख विरले कोटां विच्चों उठण, जिन्हां आपणी दया कमाईआ। दुनियां तों आवां लुकण, जगत नेत्र दरस कोई ना पाईआ। फेर तैनूं आवां पुच्छण, लहणा देणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखणहारा मार ध्यान, निगाह आपणी विच्च रखाईआ। (१४ मध्घर शै सं २ गुरदयाल सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस कहे मेरे वेंहदिआं भज्जा आ गया ख़रगोश, सुध्ध बुद्ध भुलाईआ। गोबिन्द चरनीं डिग्गा हो बेहोश, चारे टंगाँ उप्पर उठाईआ । सांस नाल हिल्ले पोश, खलड़ी दए दुहाईआ। साहिब सतिगुर कुछ सोच, अंदरे अंदर रिहा जणाईआ। क्यों जन्म दित्ता मातलोक, जूनीआं विच्च भवाईआ। मेरे पिच्छे शिकारी लग्गे बहुत, भट्टी जात अखवाईआ । फ़तूरीए ओन्हां दे दोहत, कहिलूरीए नाल रलाईआ। गिआरां दिन लुकदा रिहा रोज़, आपणा आप छुपाईआ। करदा रिहा खोज, चारों कुण्ट नैण तकाईआ। शब्दी हुक्म अंदर तूं आपणी दस्सी मौज, कन्ढे बैठा धुर दा माहीआ। ग़रीब उधारना जिस दा जोग, दीनां दया कमाईआ। मैं एथे गया पहुंच, चरन कँवल सीस झुकाईआ । बन्दना कर डण्डौत, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

ख़रगोश पिच्छे आए कुत्ते चार, सूकर नाम रखवाईआ। नेत्र रो पए ज़ारो ज़ार, कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर गोबिन्द धार, तेरे हत्थ वडयाईआ। साडे नाल गोबिन्द कर प्यार, सच्च दईए सुणाईआ। नानक दे के गया लार, शब्दी हुक्म नाल दृढ़ाईआ। लालो दवारे दर्शन कीता आण, घरों बाहर वेख वरवाईआ। निम्रता नाल कीती प्रनाम, बन्दगी सीस झुकाईआ। ओस दिता फ़रमाण, भेव अभेद खुल्हाईआ। जिस वेले गोबिन्द भथ्था लै के आवे विच्च जहान, चिल्ला धुर दा हत्थ उठाईआ। तुहानूं देवे इक्क ज्ञान, भेव अभेद खुल्हाईआ । होवे मेहरवान, लहणा देणा दए मुकाईआ। कूकर कहण उह वक्त पहुंचिआ आण, साडा अन्तर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा वरवाईआ।

गोबिन्द किहा एह सूकर आए नट्ठे, आपणा पन्ध मुकाईआ। ख़रगोश नाल होए कट्ठे , लेखा पिछला रिहा दृढ़ाईआ। तुहाढ्ढा पूरब जन्म नौं नौं वार होया जोबन वाले वच्छे, पंज साल तों वध्ध उमर ना कोई भुगताईआ। इक्क वारी मानस जन्म मिल्या अच्छे, अच्छी तरां दृढ़ाईआ । तुसीं मेरी चरनी ढठ्ठे, महीने साढे तिन्न सेव कमाईआ। तुहाढ्ढे मनां ने पाए रट्टे, अंदरों दित्ता भड़काईआ। किस दे जाल विच्च फसे, डोरी लिआ बंधाईआ। चोरी चोरी मेरी खेल वेख हस्से, चुगली निन्दिआ खुशी बणाईआ। जिस वेले मैं प्रगटाए पंज कक्के, कर्म कांड दा डेरा ढाईआ । तुसां पंजां ने चोरी कर के गुरमुखां दे कच्छे, भज्ज गए वाहो दाहीआ। ओसे वेले शब्दी धार मैनूं दस्से, सुनेहड़ा दित्ता पुचाईआ। हुक्म अंदर दे के धक्के, दवारिउँ बाहर दिता कढ्ढाईआ । तुहाढ्ढा लेखा केहड़ा कट्टे, चुरासी विच्चों कवण छुडाईआ। तुसीं गिआरां वार आंडिआं विच्च बणे बच्चे, घोगढ़ पिछले दिआं समझाईआ। तिन्न वार मेरा बाज़ तुहानूं सट्टे, छत्ती दिन तों वध्ध उमर ना किसे भुगताईआ । अन्त वेर बाज़ मेरी चरनी ढठ्ठे, निउँ के सीस निवाईआ । कुछ खेल दस्स सतिगुर सच्चे, दर तेरे मंग मंगाईआ। मैनूं ऐं दिसदा एह तेरे सिख कच्चे, कच्चा तन्द नज़री आईआ। कर किरपा बख्श एह वी तेरे बच्चे, लहणा दे मुकाईआ। गोबिन्द किहा मेहरवान हो के करां कट्ठे, देवां माण वडयाईआ। एन्हां नूं शौह दरया कोई ना सट्टे, जल धार ना कोई रुड़्हाईआ। एसे कारन बिआस दे आए तट्टे, किनारे उत्ते डेरा लाईआ । गोबिन्द एन्हां पत्त रक्खे, नाता

जगत नालों तुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे ढके, जिथ्थे फेर ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहणा रिहा मुकाईआ ।

सवानां पिच्छे आए नौं शिकारी, टोपीआं पग्गाँ सिर टिकाईआ। इक्क दा नां विच्च गिरधारी, गोपी चन्द पिता रिहा बणाईआ। उहदी पत्थर ठाकर नाल यारी, नित्त नित्त इशनान कराईआ । उहदे घर प्रभ दे मिलण वाली सधरां भरी लाड़ी, उमर इक्की साल जणाईआ। ग़रीबी विच्च सदा करे दिहाड़ी, मिहनत कर के रोटी खाईआ। गोबिन्द वेख उह वी मंगण आ गई वाड़ी, सीस झुका के सीस निवाईआ। बांके तेरी सोहणी लग्गे दाड़ी, दाढ़ी दा सदका कुछ खैर देणा पाईआ । असीं लोक गवार रहणा विच्च पहाड़ी, बुद्धि समझ ना कोई समझाईआ । मेरे हत्थ वेख कुहाड़ी, बालण कट्ट के झट्ट लंघाईआ। नाल तिक्खी रक्खी आरी, सवा गिठ विच्च लंबाईआ । मैनूं प्रभ दे मिलण दी बीमारी, एह दुःख अठ्ठे पहर सताईआ। एसे बिआस विच्च मैं ठरां दिन दिहाड़ी, रोज़ नहा नहा के वास्ताा पाईआ। अठारां साल रही कुंवारी, कुंभ विच्च पाणी रक्ख के जल पिण्डे उत्ते वहाईआ। मेरी बध्धी ना किसे धारी, अंदरों धीरज ना कोई रखवाईआ । मैं वेख के सूकर दरवेश तेरे भिखारी, बेनन्ती दित्ती सुणाईआ। एनूां नवां विच्चों मेरा पती जिस ने मैनूं कीता दुखयारी, पोश गोश नित्त रसना नाल लगाईआ। वैराग विच्च आ के उतों आपणी चुंनी पाड़ी, टुकड़े दो दित्ते कराईआ। थल्ले वच्छा के नेत्र रो के हौका भर के धाहां मार के किहा मेरी सधरां वाली खारी, उत्तों भार देणा लुहाईआ। भुक्खी नूं फिरदिआं लघँ गई अज्ज दी दिहाड़ी, कीमत हत्थ ना किसे फड़ाईआ। मैनूं अैं दिसदा ना तूं पुरख ना तूं नारी, नर नरायण नज़री आईआ। वेखीं मैनूं किते मैनूं वसदी नूं ना उजाड़ीं, सूकरां नाल शकारीआं दा लेखा मुकाईआ। मेरे उत्ते फेर मुसीबत आवे भारी, मैनूं रण्डी कहे लोकाईआ । मैनूं बणावीं ना मात विभचारी, कुकर्मी तों लैणा छुडाईआ। पिच्छों आ के ओस दी मां ने वाज मारी, सदो कर के रही बुलाईआ। उठ घर नूं चल्लीए उतों रात आई काली, अन्धेरा रिहा छाईआ। सदो किहा मां मैनूं जगदी दिसे दीवाली, दीप माला सोहणी वेख वखाईआ । एह दुखीआं दा पाली, सूरबीर बांका वड्डा बेपरवाहीआ। जे फल ला देवे मेरी डाल्ही, अमृत रस खवाईआ। मेरी लेखे लग्ग जाए घाल घाली, जेहड़े नौं सौ चुरानवें कदम चल के एहदे पास आईआ। मेरी बुद्धि अजे बाली, नढ्ढी रूप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लहणा देणा रिहा मुकाईआ।

सदो कहे मेरा हाढ़ो, निउँ के सीस निवाईआ। सिंधू कहे मैं एस दा लाड़ा, जोड़ जगत वाला जुड़ाईआ। मेरे कोल नहीं कोई भाड़ा, पत्तण पार ना कोई कराईआ। सदो किहा एह धुर दा सिकदारा, मैनूं नज़री आईआ। कमलिआ बण जा चरनां दा भिखारा, भिच्छया धुर दी देवे पाईआ। फेर लभ्भणा नहीं बिआस किनारा, तट्टां विच्चों हत्थ किसे ना आईआ। उह कर के निमस्कारा, धूड़ चरनां नाल चरनां उत्ते आपणा सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ।

बिआस कहे ओन्हां दे पिच्छे सत्त आ गए मंडी दे सिकदार, सुंब घोड़यां वाले हिलाईआ । सोहणे शस्त्र तन शिंगार, जोबन छहिबर लाईआ। दूर खलो गए कदम नौं दस पंज चार, इक्क दूजे वल ध्यान लगाईआ। बिआस कहे मैं वेख्या ओन्हां दा हाल, अंदरे अंदर रहे कुरलाईआ। गोबिन्द टेडी अक्ख कर के थोड़ा जेहा दिता जमाल, जमाल दे के आपणी पिट्ठ बदलाईआ। ओन्हां नूं नज़री औण डह पिआ काल, तिन्नां सालां दे अंदर सभ दी होणी सफ़ाईआ । जेबां विच्चों कढ्ढ के रुमाल, नेत्रां दे हन्झू साफ़ कराईआ। झट्ट भथ्थे ने किहा अज्ज मैनूं बणाओ दलाल, मेरे कारन गोबिन्द तट्ट किनारे डेरा लाईआ। हैरानी विच्च अंदरे अंदर कहण एह की होया कमाल, सानूं कवण ख़बर सुणाईआ। ओधरों इक्क चनिआं दा सौदा करौण वाला आ गया दलाल, जो मंडी दा शाहकार अखवाईआ। अक्ख पुट के नैण तक्क के वेख्या इस दी पिठ दे उत्ते ढाल, सोहणा रंग चमकाईआ। किते सानूं ना देवे मार, खड़ग खण्डा उठाईआ । हौली जेही आण के कीता सवाल, साथीआं दित्ता जणाईआ। चलो भज्जीए घोड़यां वाले असवार, नाल मैनूं लउ टिकाईआ। झट्ट भथ्थे किहा ख़बरदार, गोबिन्द कन्ढे आया भज्ज कोई ना जाईआ । अज्ज दा दिन मेरे वंडे आया, जो आया पार लंघाईआ। गोबिन्द दे डण्डे चढ़ाया, पौड़ी दो जहान ना कोई वखाईआ। तुसीं मानस बन्दे तुहानूं सतिगुर नज़र ना आया, जो सभ दा पिता माईआ। मारदा नहीं मोयां नूं ज्वालण आया, सद जीवत आपणे विच्च समाईआ । अचरज इस ने खेल कराया, जिस नूं समझ कोई ना राईआ। सारयां खुशी नाल सीस झुकाया, चरनीं डिग्ग के चरन चुम्म के चम्म दृष्टी लई बदलाईआ।

इन्हां दे पिच्छे इक्क कसाई मछली फड़न वाला आया, जाल मोढ्ढिआं उत्ते टिकाईआ । कुण्डीआं दा अग्गों मूंह भवाया, नौं सौ नड़िनवें इक्को तन्द बंधाईआ। ढाई ढाई तोले गोशत सभ दे अग्गे टिकाया, कांटिआं नाल अटकाईआ । खुशीआं विच्च अंदरे अंदर करे सलाहिआ, आपणा मता पकाईआ। जे किरपा करे बेपरवाहिआ, मेरा पूर दए भराईआ। नौं सौ नड़िनवे मीन इक्को वार दए फसाया, बच्च के निकल कोई ना जाईआ। फेर कहे मैं बिआस किनारे आया, प्रभ ने मेरी आसा पूर कराईआ । ढाई रुपईए सैंकड़ा सभ दा मुल्ल देवां पवाया, पंझीआं विच्चों रकम थोड़ी लवां बणाईआ। फेर खुश होवे मेरे घर वाली जिस दा नाम माया, उमर पैंती साल हंढाईआ। जिस ने नवां बच्चिआं नूं जन्म दवाया, छोटा अठारां दिन दा नज़री आईआ। फेर कहां छोटे बच्चे ने मेरा रोज़गार बणाया, सौदा सच्च कराईआ। सोचां सोचदा चलदा चलदा ओसे कन्ढे आया, जिथ्थे गोबिन्द डेरा लाईआ। झट्ट ओसे वेले भथ्था आपणी धार नाल उहदा हिरदा सलदा, तीर निराला दित्ता लगाईआ। कुछ लेखा दे कल दा, मच्छिआं दे नौं वट्टे, साढे तिन्न जूए विच्च लाए सट्टे, ढाई वेसवा झोली घत्ते, इक्क नाल मन दी वासना मारे फक्के, दोहां नाल बच्चिआं झट्ट लंघाईआ। छेती नाल बचन दस्स दे सच्चे, तेरे यार किथ्थे कच्चे, जिन्हां नाल चोरी अक्ख मिलाईआ। ओसे वेले माहीगीर चरनीं ढठ्ठे, रो के दए दुहाईआ। मेरे पाप कौण कट्टे, मैं पड़दा दिआं उठाईआ। मैं आपणे चाचे दे तिन्न पुत्त कट्टे, जिन्हां दे हिस्से पिच्छे आपणी कीती चतराईआ। एसे घाट उत्ते वारो वारी आ के सुट्टे, पाणी जल दित्ते रुड़्हाईआ। ओधरों भौंक पए चारे

कुत्ते, होका दे के रहे दृढ़ाईआ। उहनूं नज़र आ गए ओसे वेले मेरे जन्म होए तिन्न पुट्ठे, अग्गा पिच्छा नज़र कोई ना आईआ। ओधरों भथ्थे दा निशाना फेर छुट्टे, आपणा बल प्रगटाईआ। सहिआ ख़रगोश आपणीआं चारों टंगाँ उलटे, सिध्धा हो के कन्न हिलाईआ। रो के किहा गोबिन्द साड्डे अपराध वेख ना होवीं गुस्से, सारे दुखीए तेरे अग्गे कुरलाईआ। धन्न भाग जे तेरा दर्शन पाया साचे जुस्से, साडे जिस्म दे बदलाईआ। तेरे बिनां कोई ना पुच्छे, पुशत पनाह हत्थ ना कोई टिकाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आ गए रुट्ठे, रुसिआं लै मनाईआ। किरपा कर के बणा आपणे पुत्ते, पिता हो के दे वडयाईआ।

बिआस कहे मैं खेल वेखे वेले ओसे, सन्मुख हो के अक्ख खुल्हाईआ । ओधरों वणजारा वेखण आ गिआ इक्क धुँसे, कन्नी लाल पीली बणाईआ । सोहणी उन नाल गुंदे, डोरे ढाई उंगलां रखाईआ। उहदे पिच्छे तिन्न आ गए गुंडे, सोटे मोढ्ढिआं उत्ते टिकाईआ। अग्गे नौजवान सुरसती अस्सी कदम ते सिट्टे रही डुंगे, हत्थ बाजरे नाल छुहाईआ। उहदे कन्नीं सी ढाई तोले दे बुंदे, मोती नौं नौं जुड़ाईआ। वाल चोटी उत्ते पिच्छों अग्गे नूं गुंदे, लिटां मथ्थे उत्ते लटकाईआ। ओने चिर नूं चौदां कट्ठे आ गए गुंगे, इशारयां नाल इक्क दूजे समझाईआ । जे सानूं कुझ बाजरा पा देवे झोली विच्च झुंगे, रुंगा कर के लईए खाईआ। ओने चिर नूं गवालण लै के आ गई दूधे, मटकी सिर दे उत्ते उठाईआ । दो बुढ्ढे आ गए डुड्डे, हत्थां नाल चल्लण वाहो दाहीआ। ओधरों मैंडक नौं निकल के बाहर कुद्द, आपणी आपणी छाल वखाईआ। गोबिन्द सभ दीआं आसां बुज्झे, कन्ढ्ढे उत्ते बैठा भार वक्खी वाला पाईआ।

ओधरों किनारे तक्कया दूजे, दो गज़ देण दुहाईआ। अंदरों बड़ा दुःखे, दर्द रहे सुणाईआ । गोबिन्द असीं इकी जन्म दे भुक्खे, गुर हरि गोबिन्द गिआ समझाईआ। जंगलां विच्च रहे लुके, प्रभासां विच्च झट्ट लंघाईआ। बिन तेरे साडा पैंडा मूल ना मुक्के, अगला पन्ध ना कोई चुकाईआ। ओधरों ओन्हां दा महावत अग्ग रक्ख रिहा सी उत्ते हुक्के, फूक मुख नाल लगाईआ । लकड़ी दे थां ओस बाल दित्ते किक्करां दे तुक्के, जिन्हां दे अंदर बीज देण दुहाईआ। बौहड़ी असीं अद्ध असमानों टुट्टे, धरती उत्ते आपणा आप रुलाईआ। साडी वात कोई ना पुच्छे, फल फुल्ल कम्म किसे ना आईआ। पता नहीं गोबिन्द किहड़ी गल्लों साडे नाल रुस्से, दूर बैठा अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। उच्ची कूक पुकार किहा बौहड़ी दरोही सतिगुर नालों कदे ना किसे दी टुट्टे, जगत जीवण कम्म किसे ना आईआ।

ओधरों तिन्न चोर आ गए जिन्हां जांदे राही लुट्टे, चांदी तर्ह्ठ तोले झोली पाईआ। ओधरों इक्क सवाणी आ गई जिस ने शिंगार कीता आपणे सज्जे गुट्टे, चूड़ीआं मुलम्मे वालीआं पाईआ । चोर ओसे वेले उहदे उत्ते तुट्टे, आपणा बल वखाईआ। ओन लाह के कंगण ओन्हां अग्गे सुट्टे, दो हत्थीं ताली दित्ती वजाईआ। औह वेखे गोबिन्द तुहाड्डी जड़्ह पुट्टे, जो मेरा पिता माईआ । मैनूं आपे गोदी चुक्के, बच्ची आपणी लए बणाईआ। ओधरों टोपी विच्च रो पए तुक्के, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। भैण की तूं वी साडे नाल गुस्से, तेरे

अग्गे वास्ताा पाईआ। जे फड़ के साड्डी अगनी अग्ग अंगिआर वाली सवाह कर के उहदे चरनां उत्ते सुट्टें, धूड़ बण के खुशी लईए मनाईआ। ओधरों दो नौजवान आ गए राह घुस्से, परेशानी विच्च परेशान नज़री आईआ। ओन्हां दे अंदर इक्को लहर उठे, हौली हौली रही हिलाईआ। तुहाढ्ढे वेले अन्त अखीरी चुक्के, चक्क खूह वांगू फेर नज़र किसे ना आईआ। उह इक्क दूजे नूं रहे पुच्छे, आपणा आपणा हाल सुणाईआ। ओधरों सट्ठ साल दी माई बुढ्ढी तिन्न भुंन के आई गई भुट्टे, पाटे चीथड़ नाल रखवाईआ। वे बच्चयो जे तुहानूं पार किनारे वाला पुच्छे, पसचाताप दए मुकाईआ। तुहाढ्ढे अंदर ओस दा प्रेम फुट्टे, फट जन्म जन्म दा दए मिटाईआ। औह वेखो सूकर ओसे दे तीर नाल फट्टे, खरगोश खुदी गिआ गवाईआ। ओसे ने तारने पत्थर वट्टे, मेहर निगाह नज़र जिध्धर उठाईआ। ओसे वेले सारे उठ के नस्से, भज्जे वाहो दाहीआ। बिआस निमाणा हो के राह दोहां विचकारों छड्डे, जल धारा अग्गे पिच्छे ना कोई हिलाईआ। गोबिन्द किहा नेड़े आइआं नूं आओ मेरे डड्डे, बच्चयो दिआं वडयाईआ। अज्ज तों तुहानूं आपणे लावां अग्गे, अगला पन्ध मुकाईआ। चुरासी विच्चों कढ्ढे, जम की फ़ासी दित्ती तुड़ाईआ। फेर जिस वेले आवां तुसीं सारे आओ सद्दे, मेरे नाल मेरा संग बणाईआ। मैं मनुश बणौणे सन्त बणौणे भगत बणौणे तुसीं खोते गधे, लूल्हे लंगड़े टुंडे आपणे नाल मिलाईआ। मेरे प्यार अंदर बद्धे, तत्ती वा कदे ना लग्गे, सदा रहो सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छेसोहणा जोड़ जुड़ाईआ।

बिआस कहे मैं परेशान हो के दोवें हत्थ बद्धे, निउँ के वास्ताा पाईआ। साहिब सतिगुर तैनूं केहड़े लगदे चंगे, मैनूं दे समझाईआ। की जेहड़े नहौंदे गोदावरी गंगे, सुरसती जमना तारीआं लाईआ। गोबिन्द किहा बिन मेरे प्यार सारे गंदे, नहावण धोवण कम्म किसे ना आईआ। जेहड़े मुहब्बत विच्च रंगे, कदे ना होवण नंगे, मन्दयां दे मंदे आपणे घर वसाईआ। बिआस किहा की फेर पाहुल देवें नाल खण्डे, जल पाणी किस बिध वंडें, जाम केहड़ा दोवें पिआईआ। गोबिन्द किहा ओन्हां दे अन्तर निरंतर हो के मेरी धार लंघे, मैं रहण ना देवां दो रंगे, फसा के आपणे फंदे, दन्दे अगले दिआं बणाईआ। सदा रक्ख के ठंडे, बिना बन्दगी तों पार करा के आपणे बन्दे, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सुणा के छन्दे, आपणा रंग वखाईआ। बिआस किहा की फेर वी आएं मेरे कन्ढे, आपणा चरन छुहाईआ। गोबिन्द किहा तेरे तों पार मेरे गुरमुख चंगे, जिन्हां नाल मिल के आपणा झट्ट लंघाईआ। एसे कारन गुरमुखो तुहाढ्ढे नाते गंढ्ढे, कीता कौल भुल्ल कदे ना जाईआ। गुरमुख गुरसिख भावें मैथों कुछ मंगे भावें ना मंगे, जिस दा देणा ओसे दी झोली पाईआ।

बिआस किहा तेरी जोबन जवानी केहड़े थां हंढे, टिकाणा दे दरसाईआ। गोबिन्द किहा बिआस जिथ्थे बेआसा कोई ना लँघे, जग नेत्र अक्ख ना कोई उठाईआ। ओथ्थे गुरमुखां दे अंदर मेरे सिँघासण चंगे, जिन्हां दी शाल दोशाल कीमत ना कोई रखवाईआ। बिआस किहा की फेर करें जंगे, मैनूं दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा अज्ज तों एह भथ्थे धो के पुरख अकाल दे चरनीं टंगे, जगत शस्त्रां वाली ना कोई लड़ाईआ। हुक्मे अंदर खण्ड ब्रह्मण्डे, जिथ्थे चमके ना कोई चंड परचंडे, इक्को मेरा नूर कूड़ सारा दए मिटाईआ। मेरा खेल

समझे कोई ना पंडे, ना कोई जाणे क्यों पुत्तर चारे वंडे, खेल आपणे नाल कराईआ। बिआस किहा तेरा गुरमुख ओस वेले की कुछ तैथों मंगे, की वस्त देवें वरताईआ । गोबिन्द किहा मैं ओनृां दा ते उह मेरे मैं कोई हिसाब किताब नहीं वंडे, वंडां विच्च गुरमुख ना कदे रखाईआ। जो चढ़ गए मेरे डण्डे, अन्त मेरे विच्च बहि के मेरे डेरा लाईआ। बिआसा चरन चुम्म ला तेरे भाग हो जाण चंगे, चंगिआं गुरमुखां नाल दिआं वडयाईआ। एसे कारन गुरमुखो तुसीं सतिगुर नाल लँघे, पत्तणां उतों दित्ता टपाईआ।

बिआस किहा गोबिन्द औह वेख मैनूं कुछ दस्स रिहा संजे, द्वापर अन्त अख़ीर समझाईआ । राज राजान शाह सुल्तान मैनूं सारे दिसदे सिर तों गंजे, पड़दा उप्पर ना कोई टिकाईआ। चार वरन अठारां बरन सारे हाए हाए करदे फड़ के कन्धे, कर्मां दा भार ना कोई वंडाईआ । मैं वेख्या जेहड़े गुरमुख तेरा पत्तण लँघे, रंगण अगली गए रंगाईआ। ओने चिर नूं सुथरे वजौंदे आ गए डण्डे, तेरी तेरी तेरी बेपरवाहीआ। ओधरों पवण चल पई ठंडे, सिरों बोदीआं रही हिलाईआ। पवण झकोला दित्ता सारे पिंडिउँ हो गए नंगे, धोती हत्थ किसे ना आईआ । अक्खां मीट होए शरमिंदे, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। बिआस किहा, क्यों, मर गए जींदे, आपणा आप मिटाईआ। हौली जिही सारे रल के कूंदे, हाए हाए कर सुणाईआ । ओसे वेले डिग्ग पए भार मूंह दे, सिर गोबिन्द चरनां वल नज़री आईआ। बिआस किहा गोबिन्द एह नेड़े पुज्ज गए तेरी बरूंह दे, इनृां नूं पता नहीं एह धुर दा सच्चा माहीआ। मैं शास्त्रां विच्चों सुणिआ सभ कुछ हत्थ पूरे सतिगुरू दे, बिन सतिगुर मिले ना किसे वडयाईआ । गोबिन्द तेरे खेल ज़रा छूह दे, छोंहदिआं सभ दा बेड़ा पार कराईआ। इनृां दे रोग मिटा दे लूं लूं दे, लोक परलोक तेरा जस गाईआ। नाद सुणा दे तूं ही तूं दे, शब्द अनादी धुन उपजाईआ । गोबिन्द किहा बिआसा तैनूं पता नहीं एह मालक वड्डे तिन्नां माहलां वाले खूह दे, हलट पुठ्ठे सिध्धे भवाईआ। एह कुत्ते ओसे जूह दे, जिथों ख़रगोश नट्ठ के आईआ। ओधरों कुछ संदेशे आ गए भगत ध्रूरू दे, धरोह करीं ना गुरू गोसाईंआ। की होया जे एह मालक खूह दे, हुण दरवेश तेरी बरूंह दे, दर तेरे सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा मेहर निगाह नाल लेखे मुकावां बिआस तेरी रजूअ दे, वजूह वज़ृा नाल बणाईआ। सारे कहण पुरख अकाल सतिगुर गोबिन्द कलिजुग अन्त आपणे खेल वखौणे शुरु दे, शरअ विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखिआं विच्चों लेखे आपणे लेखे पाईआ। (१४ मध्घर शै सं २ प्रीतम सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस कहे मेरे कन्ढे आ गया बाघ, मुख खून नाल रंगाईआ। गोबिन्द दा जगदा वेख चिराग, चारागाहां विच्च दिसी रुशनाईआ। गोबिन्द शब्दी अंदरों मारी आवाज़, मेरी पिछली सुरत खुल्हाईआ। जां वेख्या मैं बाली जिस सुगरीव दा खोहिआ ताज, नारी

ज़ोर नाल दबाईआ। राम दा भुल्ल के राम राज, आपणा बल वधाईआ। अंदर मेरे मैनूं दिसिआ दाग़, पवित्र साफ़ ना कोई कराईआ। मेरी कूक के निकली चांग, भबक दी बजाए तभक के हाल सुणाईआ। ओधरों जल दी आ गई कांग, लहर लहर नाल टकराईआ। बांस दी सोटी रुढ़दी आई डांग, साढे तिन्न हत्थ रूप बदलाईआ। उहदे पिच्छे इक्क नज़री आई टांग, पैर अद्धा रही वखाईआ। जिस दे विच्च गोबिन्द मिलण दी तांघ, आसा नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा समझाईआ।

बिआस कहे जिस वेले बाघ लग्गा रोण, मैं करवट लई बदलाईआ। एथ्थे आया कौण, नेत्र नीर वहाईआ। शब्द स्नेहा दित्ता पौण, मैनूं दित्ता दृढ़ाईआ। ओधरों आशा नट्ठी आई रौण, बिनां सीस तों दए दुहाईआ। हत्थ मल के आई पछतौण, पसचाताप विच्च दुहाईआ। पिछला हाल आई सुणौण, पड़दा रही चुकाईआ। जिस वेले मैं राम नूं आया सां मुकौण, आप मुक्क के आपणा आप मुकाईआ। ओस वेले राम ने शब्दी हुक्म नाल धफ्फा लाया मेरी धौण, मैनूं दित्ता दृढ़ाईआ। त्रेता द्वापर तैनूं दिता सौण, कलिजुग अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले शब्दी गोबिन्द दुखीआं दा दर्द आया वंडौण, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। सचखण्ड दवारे आया पुचौण, फड़ बाहों पार लंघाईआ। पूरब लहणा सभ दा आया चुकौण, लेखा दए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया आया ढौण, सुच्च सुच्च प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ।

बिआस कहे मेरे विच्च रुढ़दी आई कंडिआं वाली छापी, टाहणीआं नौं वंड वंडाईआ। कंडिआं दी नोक उत्ते नौं नौं पापी, जेहड़े सतिगुर तों मुख भवाईआ। गोबिन्द ओन्हां दी शब्द धार वखाई पाती, बिन अक्खरां दित्ता दृढ़ाईआ। मैं हस्स के कीती हासी, खुशीआं नाल ताली दित्ती वजाईआ। ओधरों मंडी वाले राजे दी आ गई मासी, जेहड़ी नौं साल पहले आपणा तन गई तजाईआ। ओनूं अन्त अख़ीर गोबिन्द मिलण दी आसी, आसा आपणे नाल रखाईआ। जिस दे नाल नीच जात दी दासी, आयू सत्तर साल वंड वंडाईआ। उह जम्मीं सी विच्च कांसी, पिता चन्दू नाउँ धराईआ। नीवें घर दी जाती, सेवा विच्च वडयाईआ। अन्त वेले मरन लग्गी ओस नूं गल्ल आखी, मेरा मिल्या ना गोबिन्द माहीआ। सभ तों प्रीत चंगी मेरी नाल चाची, जेहड़ी राम दा इष्ट मनाईआ। जिस ने डोली विच्च पैण लग्गी मैनूं साबण दी दित्ती गाची, हत्थ मेरे फड़ाईआ। जिंनां चिर नज़र ना आवे साख्याती, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

राणी किहा एह मेरी गाची साबण, आशा विच्च दबाईआ। अज्ज होई वड वड भागण, गोबिन्द मिल्या बेपरवाहीआ। मैं एस नूं आई आखण, तेरी ओट तकाईआ। ओने चिर नूं गोबिन्द कच्ची लक्कड़ दी भन्न के दातण, दन्दां हेठ दबाईआ। उहदी अंदरों सुरती लग्गी पाटण, पड़दा दित्ता उठाईआ। वेख्या खेल गोबिन्द नाल पुरख अबिनाशन, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ।

बिआस कहे मेरे अंदर रुढ़दे आए कक्ख, घौंसला बणया नज़री आईआ। जिस दे विच्च इक्क बच्च, तिन्न दिन दी उम्र वखाईआ। उस दे कोल खाण नूं कच्च, दूजी वस्त ना कोई टिकाईआ। नेड़ आ के ओन तक्कया नाल अक्ख, गोबिन्द कन्ढे बैठा सोभा पाईआ। नंन्हा पिआ हस्स, खुशीआं विच्च ताली दिती लगाईआ। सूरबीर हुण ते मैनूं रक्ख, रुढ़दिआं पार कराईआ। मैं उह तलवंडी वाला जट्ट, जिस दी खेती मझीआं दित्ती खवाईआ। बड़े जन्म लए कट्ट, दुःख दर्द ना कोई वंडाईआ। हुण आ गया तेरे तट्ट, किनारे उत्ते डेरा लाईआ। बौहड़ी हुण ना देवीं छड्ड, रो रो दिआं दुहाईआ। एने चिर नूं पाणी विच्चों मार के छाल डड्ड, ओसे घोसले विच्च बैठी आईआ। गोबिन्द मैं वी नहीं होणा अड्ड, तेरी ओट तकाईआ। मैनूं चुरासी विच्चों कढ्ढ, मैं तेरी जन्म वेले दी दाईआ। जेहड़ी शरीर गई छड्ड, नाता जगत तुड़ाईआ। मैथों भुल्ल होई मैं तैनूं टेकिआ नहीं सी मथ्थ, बच्चा समझ के ज़मीन उत्ते दित्ता लटाईआ। गोबिन्द अग्गों पिआ हस्स, तेरी सेवा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

बिआस कहे मेरे विच्च रुढ़दा आया बूर, भज्जया वाहो दाहीआ। ओन्हां विच्चों इक्क पत्ता सी खजूर, जिस दी नोक अग्गों तिक्खी नज़री आईआ। उहदे उत्ते पई सी धूड़, मिट्टी घट्टे नाल वडयाईआ। सोहणा बणया पूर, कट्ठे हो के झट्ट लंघाईआ। ओन्हां वेख्या गोबिन्द खड़ा दूर, दूर दुराडा डेरा लाईआ। नेड़े आया नूर, नूर विच्च रुशनाईआ। ओन्हां रो के किहा मैं पत्ता नहीं खजूर, खुशी नाल जणाईआ। मैं उह पत्थर जिथ्थे मूसा डिग्गा उत्ते कोहतूर, आपणा आप भुलाईआ। ओस वेले मैनूं आया ग़रूर, हँकार विच्च सजदा ना कोई कराईआ। ओस ने हुक्म दित्ता ज़रूर, मैनूं दिता दृढ़ाईआ। तेरा लेखा कलिजुग गोबिन्द मेटे जिस ने तारने मूरख मूढ़, मुग्धां पार कराईआ। मेरी सांभ के रखीं एह धूड़, तेरे उत्ते दित्ती टिकाईआ। तूं उतरना ओस दे पूर, मूसे किहा मैनूं पुरी अनन्द दा वासी नज़री आईआ। बिआस किहा मैं हैरान होया मेरा सड़ना फ़ज़ूल, पता नहीं एह क्यों सभ नूं पार कराईआ। गोबिन्द हस्स के किहा बिआस मेरा जगत अक्खरां वाला नहीं मज़मून, गुर अवतार पैगम्बरां वाला नहीं कानूंन, ना मालूम आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी वेखे सारे बालक बच्चे मासूम, छोटे वड्डे आपणे रंग रंगाईआ।

(१५ मध्घर शै सं २ प्रेम सिंघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस कहे फेर भथ्था पिआ बोल, तिन्न वार आवाज़ लगाईआ। मैनूं सद्दिआ आ मेरे कोल, तैनूं दिआं दृढ़ाईआ। सतिगुर दे चोल, धुर दे दिआं समझाईआ। एस ने जोती धार जाणा मौल, शब्दी रूप वटाईआ। अज्ज दा याद कर कौल, इकरार दिआं सुणाईआ। जिस वेले मुड़ के आया उप्पर धौल, निरगुण हो के फेरा पाईआ। साचे धाम

बैठा रहे अडोल, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। ओस वेले बिआस भावें शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता जगत ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी किन्नां वजावे ढोल, बिन गोबिन्द किरपा अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। बिआस कैहंदा भथ्थया मेरे दिल नूं पैंदा हौल, की एहो जेही कार कमाईआ। भथ्था कहे तूं ना समझ मखौल, मैं सच्च दित्ता दृढ़ाईआ। कोई हिसाब ना ला सके पांधा रौल, पंडतां चले ना कोई चतराईआ। इस दा भेव जाणे कौण, गुण कवण गाईआ। जिस नूं झुकदे पवण पौण, पाणी बसन्तर सीस निवाईआ। ज़रूर गुरमुखां फेर आपणे नाल आवे मिलौण, मेला लए कराईआ। चौह जुगाँ तों वक्खरा आपणा नाम आए जपौण, ढोला इक्को दए सुणाईआ। सचखण्ड दवार आए बहौण, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, उजड़िआं आए वसौण, वसदिआं उजाड़ के खुशी मनाईआ।

बिआस कहे भथ्थया औह वेख उडदी आ गई भम्बीरी, खम्ब नाल रही हिलाईआ। एहदा मेल होया तकदीरी, इस दी तकदीर रही जणाईआ। उच्ची कूक के पुच्छण लग्गी मैनूं दस्सो केहड़ी चंगी फ़कीरी, जेहड़ी फ़िकर दए गवाईआ। ओधरों इक्क मालण रेड़्हदी आ गई गडीरी, टोकरीआं फुल्लां नाल भराईआ। ओधरों मुसाफर पींदा आ गया बीड़ी, दमे दा रोग रिहा सताईआ। ओधरों फ़कीर आ गया हत्थ विच्च लै ज़ंजीरी, कुल्ला सीस उत्ते टिकाईआ। बिआस कहे मैनूं वेख के होई दिलगीरी, फेर कट्ठे हो के डेरा बैठे लाईआ। गोबिन्द खुशी नाल मेरे मस्तक उंगली फेरी, लकीर दित्ती खिचाईआ। ओने चिर नूं रुढ़दी आ गई टैहणी इक्क बेरी, बेरां नाल भरी सोभा पाईआ। ओने चिर नूं वणजारा चूड़ीआं वाला मार के आया फेरी, होका गराँ गराँ सुणाईआ। ओने चिर नूं आवारा फिरदी आ गई वछेरी, उमर दस महीने बणाईआ। सारयां रो के किहा गोबिन्द हुण ना ला देरी, विछड़े लै मिलाईआ। ओन्हां विच्चों भम्बीरी किहा गोबिन्द तैनूं चंगी लग्गे केहड़ी, सानूं दे समझाईआ। किस नूं चाढ़ें आपणी बेड़ी, किस नूं वैंहदे वहण वहाईआ। गोबिन्द किहा तुहाढ्ढी प्यार धार मेरी, विचार पिछली दिआं समझाईआ। जिस तुहाढ्ढी जड़ उखेड़ी, उह वी दिआं समझाईआ। सारयां रो के किहा साडे विच्चों पापां भरी केहड़ी, सभ तों वड्डी नज़री आईआ। गोबिन्द किहा हुण तुहानूं बणा के आपणी चेरी, चिरी विछुन्नयां दुक्ख गवाईआ। फिरना पए ना अंडज जेरी, उत्भुज सेतज ना कोई भवाईआ। पिच्छे सज़ा भुगत लई बथेरी, सतिगुर तों भुलिआं मिली सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ।

ओन्हां विच्चों वछेरी किहा मैं अज्जे दवक, बेनन्ती दिआं सुणाईआ। जिस वेले बल मेरे चढ़या लक्क, आपणा आसण लाईआ। मैं तीस कोस ते जा के गई थक्क, रो रो हाल सुणाईआ। बल उतर के मैनूं मारया धक्क, मूंह दे भार सुटाईआ। मैं रो के किहा पुरख समरथ, मेरा हो सहाईआ। श्री भगवान किहा तैनूं सुणावां सच्च, हुक्म दिआं दृढ़ाईआ। एह नहीं मेरे हत्थ, नाता गोबिन्द नाल जुड़ाईआ। तिन्न जुग आपणे विच्च लवां रक्ख, मात जन्म ना कोई भवाईआ। फेर कर प्रगट, आसण पलाणा ना कोई टिकाईआ। जिस

वेले गोबिन्द आया बिआस तट्ट, किनारे डेरा लाईआ। तूं आपे औणा नट्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा लहणा मुकावे झट्ट, जन्म जन्म दा गेड़ कटाईआ। रो के किहा नाल अक्ख, अखीर दित्ता सुणाईआ। चरनां उत्ते गई ढठ्ठ, आपणा आप मिटाईआ। गोबिन्द पिठ उत्ते फेर के हत्थ, पिच्छों दुंब दित्ती हिलाईआ। हुण ओथे जा के वस, जिथ्थे मेरे गुरमुख डेरा लाईआ। मैं सभ दा इक्को घर करना इक्ठ, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, अकथ्थ आपणा हुक्म जणाईआ।

(१५ मध्घर शै सं २ करतार कौर)

* * * * *
* * * * *

बिआस कहे गोबिन्द मेरे उत्ते छुहाया हत्थ, पंजा पंजां नाल मिलाईआ। मेरी खोल्ह के दृष्टी वाली अक्ख, सृष्टी तों परे दिता समझाईआ। नज़री आया अगम्म अथाह बेपरवाह पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेशवर दो जहानां वाली शहनशाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पैगम्बर महिंमा गा के गए अकथ्थ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोलिआं विच्च सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार हुक्म देवे सच्च, सच्च संदेशा नर नरेशा इक्को इक्क जणाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त होणा प्रगट, जोती जाता ज़ाहर ज़हूर निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर जिस ने इक्को खोल्हणा हट्ट, वस्त अमोलक आपणी दए वरताईआ। लहणा देणा झगड़ा मुकाए गंगा गोदावरी जमना सुरसती तीर्थ अठ्ठ सट्ठ, तट्ट किनारा वेखे थाउँ थाईंआ। नौजवान मर्द मरदान धुर दा नाम चलाए अगम्मी रथ, बण रथवाही धुर दरगाही आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी कर के गए आस, आसा मनसा सभ दी वेख वखाईआ।

अग्गों रो के किहा बिआस, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर कवण होवे तेरा दास, याचक कवण अखवाईआ। गोबिन्द सैहजे किहा भगतां बणे साथ, आत्म परमात्म होवे गाथ, किनारा सोहे इक्को घाट, पत्तण आपणा दए वखाईआ। जिथ्थे दीन मज़्ह़ब ना जात पात, ऊँच नीच ना कोई शाख, दिवस रैण ना कोई रात, घड़ी पल जगत वासना वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची धार दए दृढ़ाईआ।

बिआस कहे जिस वेले गोबिन्द दे हत्थ ने पाया भार, भव सागर पार दित्ता कराईआ । मैनूं नज़र आया मुहम्मद नाल चार यार, सन्मुख बैठा सोभा पाईआ। परवरदिगार दा बण के ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। निउँ निउँ करे निसमकार, सजद्यां विच्च बरदा नज़री आईआ। दर दरवेश बण भिखार, फ़ाकाकशी वेखे जगत लोकाईआ। सदी

चौधवीं दा कर इज़हार, संदेशा रिहा सुणाईआ। मेरे अमामां दे अमाम धुर दे सिकदार, दरगाह साची तेरी बेपरवाहीआ। किस बिध अन्त नबेड़ा करें आण, कलिजुग खेड़ा वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर शब्द अंदर नग़मे अंदर नाम अंदर कलमे अंदर दस्सया अगम्मी कलाम, कायनात तों परे कीती पढ़ाईआ। दो जहानां श्री भगवाना, नौजवाना मर्द मरदाना वाली दो जहानां होवे हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आपणा आप सुणाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया माया ममता मेटे निशान, गढ़ हँकार दए तुड़ाईआ। जन भगत सुहेले सूफ़ी सन्त फ़कीरां लए पछाण, लक्ख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ।

बिआस कहे भार नाल मैं गया दब्बया, हौका लै के दित्ता सुणाईआ। ओसे वेले मैनूं सदी चौधवीं दा अन्त लम्भया, पड़दा रिहा ना राईआ। पिता पूत नाल करे दग़िआ, नार कन्त सेज ना कोई सुहाईआ। मुरीद मुशर्द लुटणों किसे ना छड्डुया, गुरू चेला ना कोई वडयाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़िआरा जूठ झूठ उडे घट्टया, सति धर्म ना कोई रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणे हुक्म दा पूरा कर के पट्टिया, लेखा प्रभ दे हत्थ फड़ाईआ। अन्तम मेट दीनां मज़्बां वाले रट्टया, आत्म ब्रह्म सभ नूं दे जणाईआ। तूं साहिब समरथ्थया, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म समझा साची गथिआ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा इक्को नाम धिआईआ। बिन तेरी किरपा मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच्च कोई ना वस्सया, वस्मल यार हक़ ना कोई कराईआ। बिआस कहे मैं फेर खिड़ खिड़ हस्सया, खुशीआं विच्च खुशी लई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दा लहणा देणा नबेड़े कट्टयां, अक्खरां वाला वक्खरा रहण कोई ना पाईआ। (१५ मध्घर शै सं २ अजीत सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस कहे मैं गोबिन्द दे चरन वेखे नंगे, नंगिआं उत्ते पड़दा रहे पाईआ। जिस दी छोह नाल तरदे जाण चंगे मंदे, सभ दा लहणा देणा मुकाईआ। प्रेम धार जाण रंगे, रंगत आपणी आप बदलाईआ। जिन्नां नाल मिल के कीते दंगे, दग़ेदार हो के दर्शन पाईआ। उह वी कीते ठंडे, अक्ख जिन्नां उत्ते टिकाईआ। हिंदू मुस्लिम सभ दी गंढे, जो चरन आवण सरनाईआ। कट्टी जाए चुरासी फंदे, चुराहे बैठा पार लंघाईआ। इक्को सच्च प्रीती मंगे, दूजी लोड़ ना कोई रखाईआ। छेती नाल फेर आपणा हत्थ मार के सीस फड़िआ आपणे कंघे, केसां विच्चों दस्मेश बाहर कढ्ढाईआ। तेरी धार नाल दुष्ट दुराचारी तारने पंडे, जो असतीआं बिआसा विच्च टिकाईआ। अग्गे रहण नहीं देणे रंडे, नाता धुर दे कन्त नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ।

बिआस कहे गोबिन्द खुशी नाल आपणा बाहर कढुया खंजर, खंजीर सारे देण दुहाईआ। भज्जे फिरन विच्च बंजर, बाजू बाजू नाल छुहाईआ। उधरों फटकारया होया आ गया कंजर, वेसवा दर दुरकाईआ। कोल दी लग्गा लँघण, अक्ख गोबिन्द वल रखाईआ। गोबिन्द हत्थों लाह के कंगण, उहदे अग्गे दित्ता सुटाईआ। ओस कर के दोंह हत्थां दी बन्दन, सीस दित्ता निवाईआ। धूढ़ी दा ला के चन्दन, आपणी खुशी बणाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा तूं रविदास नाल ठग्गी करन वाला उह ब्रह्मण, जिस दा बरन नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ।

बिआस कहे मेरे वेंहदिआं रेशम दे वपारी आए सौदागर, गड्डां आपणीआं बन्द कराईआ। बणे सोहणे उच्चे लम्मे बहादर, सूरबीर सोभा पाईआ। नाल चुक्की होई इक्क गागर, रुप्पया सैंकड़े पैंती विच्च टिकाईआ। उतों मूंह बध्धा नाल चादर, बिनां ढक्कण लई उठाईआ। गोबिन्द कोल आ के कर्म होया उजागर, किस्मत दित्ती बदलाईआ। मेहर निगाह नाल वखाया करनी दा करता कादर, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ।

बिआस कहे गागर मुख कीता बन्द, अंदर नज़र कुछ ना आईआ। ओधरों अन्धेरा हो गया चमकण लग्गा चन्द, चौधवीं वाला अखवाईआ। पौण ने कीती ठंड, सीत रही सताईआ। बिआस कहे उह आ गए मेरे कन्ढु, कन्ढी डेरा लाईआ। ओथे नेड़े सी इक्क जंड, जीहनूं माता कह के जगत पूजा विच्च रखाईआ। ओधरों सर्प आ गया खलार के फन, आपणा भय दृढ़ाईआ। जगत सौदागर सुणन ला के कन्न, कवण आवाज़ रिहा सुणाईआ। शब्दी हुक्म आया तुहाढे कोल एह धन, जेहड़ा धन दा हिस्सा गंगू गया चुराईआ। ओसे वेले गोबिन्द अग्गे गए मन्न, निउँ के सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा एह उह धन नहीं एह गंगू दा मन, दस साल पहले सरसे तों पहले दी आदत दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल बेपरवाहीआ।

(१५ मध्घर शै सं २ गुरमीत सिँघ)

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

गोबिन्द कहे बिआस मैं पिछला लेखा लिखदा, सभ दा लहणा देणा पूर कराईआ। अग्गे नवां रूप दस्सणा सिख दा, जिस नूं चार जुग सक्कया ना कोई प्रगटाईआ। जिन्हां दे अंदर प्यार बख्शणा इक्क दा, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। अन्तर हो के आप दिसदा, बाहरों रंग रंगाईआ। प्यार पा के खिच्चदा, बंधन विच्च बंधाईआ। पड़दा लाह के विच्च दा, विच्चों आपणा नूर चमकाईआ। वेला ना रहे जिच्च दा, दुःख विच्च ना कोई कुरलाईआ। किसे दा इष्ट रहण नहीं देणा पत्थर इट्ट दा, दूसर सीस ना कोई झुकाईआ। लेखा पूरा

करौणा भविक्ख दा, भविश विच्च वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ।

बिआस कहे की कुछ देवें सिख्या, मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द कहे अजे मैं लेख नहीं उह लिखया, जिस नूं कोई समझ आपणी करे चतराईआ। पुरख अकाल ने मैनूं दिती अगम्मी चिट्ठीआ, बिन कागज हत्थ फड़ाईआ। सिरफ़ मैं पड़दा लौहणा गुरमुखां इकीआं, इकीआं दे अग्गे इकी इकी होर बंधाईआ। करामात वखौणी खेल निक्कया, पुरख अकाल कदे ना भाईआ । जिहड़ीआं प्रेम प्यार अंदर विकीआं, कीमत अगली पिछली गई चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ।

बिआस कहे की अंदर देवें इशारा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। शब्दी देवें हुलारा, सुत्यां लएं जगाईआ। जोत दएं चमकारा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अमृत देवें ठंडा ठारा, जगत तृष्ना अग्ग बुझाईआ । गोबिन्द किहा नहीं बिन मेरी किरपा दिसे किसे ना पार किनारा, सच्च दवारे बह के खुशी ना कोई मनाईआ। मेहरवान हो के देवां इक्क सहारा, सहायक हो के सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अछल छल मेरा खेल नयारा, निराकार हो के साकार ना कदे समझाईआ। छोटीआं छोटीआं कथा जणा के वारां, वारस जगत दिआं बणाईआ। मेरे नाम दीआं शाख़ां धारां, धरनी उत्ते चमकाईआ। प्रभ दा खेल सदा नयारा, निरवैर हो के आप वखाईआ। जन भगतां बख्श के इक्क आधारा, अगला पैंडा दए चुकाईआ। बिन किरपा सतिगुर अग्गे कोई कढु ना सके हाढ़ा, आपणा दुःख सुणौण कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों लग्गे एह अखाड़ा, सोहणा रंग प्रगटाईआ। ग़मी विच्च खुशी दी दए बहारा, बहार विच्च फुहार अमृत आप चवाईआ। बिआस किहा की खेल करे निरँकारा, की आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द किहा उहदा रूप होवे हमारा, कुमार नाल मिल के आपणी करे वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलाईआ।

बिआस कहे मेरी पूरी खुल्ही नहीं सुरती, सुरत दे खुल्हाईआ। कुछ समझ नहीं अनन्द पुर दी, पुरी अनन्द दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा जिथ्थे इट्ट पत्थर नाल कदे नहीं जुड़दी, मैं ओस घर विच्च डेरा लाईआ। एह खेल आदि जुगादि साहिब सतिगुर दी, जो मैनूं रिहा वखाईआ। अगली कथा कहाणी धुर दी, तैनूं दिआं समझाईआ। कलिजुग अन्त पुरख अकाल दीन दयाल आपणी खेल करनी चोर दी, राह जांदा नज़र किसे ना आईआ। ओथे वड्डिआई नहीं चल्लणी किसे दे ज़ोर दी, ताकत ना कोई अज़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल आपणे मंतर फुरने फोर दी, फुरती सुरती समझ ना कोई पाईआ। (१५ मध्घर शै सं २ मनसा सिँघ)

* * * * *

* * * * *

बिआस कहे मैं सुण के तेरी गाथा, गुस्सा दित्ता गवाईआ। टेक के तैनूं माथा, मस्तक लिआ झुकाईआ। अगला बचन दस्स साचा, सच्च दे दृढ़ाईआ। जिस वेले कलिजुग होवे अन्धेरी राता, नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। प्यार करे ना पुत्तर माता, पिता पूत ना कोई वडयाईआ। झगढ़ा पए खादम आका, रईअत राजे करन लड़ाईआ। धर्म रहे कोई ना नाता, अधर्म वज्जे वधाईआ। फेर किस बिध तेरा चल्ले साका, भेद देणा खुल्हाईआ। गोबिन्द किहा मैं नाल लै के आवां पुरख अबिनाशा, मेला आपणे नाल मिलाईआ। चार जुग दीआं रहण ना देवां शाखां, दीनां मज़्हबां करां सफ़ाईआ। जन भगतां पूरीआं करां आशां, अरशी हो के दया कमाईआ। मेरे कोल रहमत दीआं रासां, नयामत नाम झोली पाईआ । जे कोई बुद्धि नाल मेरीआं करे किआसां, मैनूं समझ सके ना राईआ। सिरफ़ इक्क तैनूं दस्सणा मैं सचखण्ड दवारे क्यों गया सां, तन वजूद नाता जगत तुड़ाईआ। जोत विच्च जोत मिल के क्यों रिहा सां, आपणा आप छुपाईआ। ओथे जा के पुरख अकाल दी चरनीं पिआ सां, पूत हो के पिता मनाईआ। निमाणा हो के ढिहा सां, छड्ड माण वडयाईआ । पुरख अकाल किहा पिछला लेखा आपणा लिआ खां, मैं वेखां चाईं चाईंआ। गोबिन्द किहा मैं माछूवाड़े पिआ सां, सभ कुछ आपणा आप लुटाईआ। तूं बाप हो के सुत्ता क्यों रिहा सां, मेरी अक्ख तेरा राह तकाईआ। पुरख अकाल किहा शाबाश तूं मेरे भाणे विच्च पिआ सां, सुख जगत वाला मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे बिआस कुछ लग्गा पता, बिआस किहा "नहीं", रो के दित्ता सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैं लै के आया सुनेहड़ा सच्चा, सच दिआं दृढ़ाईआ। जेहड़ा गुरसिख चार जुग दा रिहा कच्चा, अन्तम कच्चयां तों पक्के दिआं बणाईआ। जोती शब्दी धार हो के नट्ठा, भज्जया वाहो दाहीआ। जगत मसखरा मैनूं करे ठट्ठा, सच्च ठठिआर दी समझ किसे ना आईआ। जिस ने लहणा देणा सभ दा मुकौणा कट्ठा, कट्ठे कर के रंग चढ़ाईआ। पुरख अकाल रोज़ रोज़ नहीं तपौंदा आपणा भट्ठा, अन्त वार कर मेहर आविआं दे आवे दाअवे नाल दए पकाईआ । की होया गुरमुखो जे तुहाडा मन करदा रट्टा, मन हुक्म अंदर सेव कमाईआ। तुहाडे गल विच्च पाया ओस ने शब्द अगम्मी पट्टा, जिस दी डोरी पटने वाले दे हत्थ फड़ाईआ। तुहाडी कोई कीमत नहीं टका, पैसिआं नाल विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सभ दा वेख वखाईआ।

गोबिन्द किहा, बिआस, दस्स की सुणिआ, ओस सिर दित्ता हिलाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द हुक्म नाल गुरमुख मेरा चुणिआ, शब्दी मेल मिलाईआ। बिआस रो के किहा ओ बिआसा अवगुणिआ, आपणा माण दे तजाईआ। पिछला वेला लंघ गया सरनाई हुण आ, सरनी ढेह के खुशी मनाईआ। धुरदरगाही वेख मलाह, बेड़ा तेरे विच्चों तेरा पार कराईआ । बिआस बिनां ज़बान तों कीती हां, अंदरे अंदर दिता सुणाईआ। सीस दित्ता निवा, चरनां उत्ते टिकाईआ। किरपा करे मेरे मेहरवां, महिबूब तेरी ओट रखाईआ । गोबिन्द किहा बिआस बहुता बोलणा चग्गा ना, जो आया सो पार कराईआ। अग्गे उह

वी तारने जेहड़े खांदे सूर गाँ, कसाई रूप बणाईआ। उह वी तारने जिन्हां माता नाल कीता जनाह, इस तों पापी परे नज़र कोई ना आईआ। उह वी तारने जेहड़े मूंह गए भवा, पिठ्ठ गए वखाईआ। उह वी तारने जिन्हां कदे नहीं जपिआ नां, प्रभ दी आस ना कोई रखवाईआ। उह वी तारने जिन्हां धर्म दा वेख्या नहीं कोई थां, सति सच्च ना कोई सुणाईआ। उह वी तारने जेहड़े कुरलौंदे वांग कां, निन्दिआ मुख नाल सुणाईआ। उह वी तारने जेहड़े चोरी चोरी लौंदे दाअ, मूर्ख हो के प्रभ नूं मूढ़ रहे बणाईआ। उह वी तारने जिन्हां दा अजे ताईं लिखया नहीं किसे नां, बहुते चुरासी विच्चों नज़री आईआ। उह वी तारने जिन्हां ने मानस हो के मानस लए खा, खूनखार रूप वटाईआ। उह वी तारने जेहड़े राहजन बणे राह, लुटेरे रूप बणाईआ । उह वी तारने जिन्हां सूफी सन्त फ़कीर दित्ते सता, आपणा हुक्म वरताईआ। उह वी तारने जिन्हां मन्दर मस्जिद दित्ते ढाह, अञ्जील कुरान ग्रंथा अग्ग लगाईआ। उह वी तारने जिन्हां याद विच्च कढिया नहीं कोई साह, स्वास विच्च ना कदे लिआईआ। उह वी तारने जेहड़े धर्म दे चले नहीं कदे राह, जूठ झूठ नाल कुड़माईआ। उह वी तारने जेहड़े भरा भैणां रहे तका, अक्ख अक्ख नाल बदलाईआ। उह वी तारने जेहड़े कूकर सूकर रूप बैठे वटा, टेडीआं जूनीआं विच्च बहिकाईआ। उह वी तारने जेहड़े बिलां विच्च डेरा बैठे ला, मिट्टी खा के झट्ट लंघाईआ। उह वी तारने जेहड़े बनास्पत रहे अखवा पत्त टैहणी नाल लहराईआ । गोबिन्द किहा, बिआस, मेरा पुरख अकाल मेरे साथ, जेहड़ा दोहां दी चरनी डिग्गा आ, ओन्हां दे बख्शे सर्ब गुनाह, बण के पिता मां, कलिजुग कूड़ कुड़िआर विच्चों बाहर कढाईआ।

बिआस किहा एह खेल तेरा कदों होणा रवां, मैनूं दे सुणाईआ । गोबिन्द किहा तेरे कन्न विच्च कुछ कहवां, होर सुणन कोई ना पाईआ। बिआस कहे मेरा नहीं कोई माटी चंमा, साथी संग ना कोई बणाईआ । गोबिन्द किहा तैनूं सभ कुछ दस्सां बिनां दमां, साह तों परे आपणी रास वखाईआ। दो तों पहले औण वाला समां, समाधी दिआं खुलाईआ। अगला लेखा फेर दस्सां नवां, धुर दा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मेट के कूडी तमां, तमन्ना इक्को दए वखाईआ। (१५ मध्घर शै सं २ चरन कौर पिण्ड गहिला)

* * * * *
* * * * *

बिआस कहे मैं पुच्छिआं फेर तेरे भगत जपण की जाप, जिन्हां पुरख अकाल नाल मिलाईआ । किस बिध उतरन पाप, दुरमत मैल धवाईआ। पवित्र होवण पाक, आपणी करन सफ़ाईआ । भाग लगौण काया माटी काच, कंचण लैण बणाईआ। मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द चमकाईआ । पूरी करन आस, तृष्ना जगत बुझाईआ। लेखे लग्गे स्वास, साह साह खुशी बणाईआ। साचा जुड़े नात, चरन मिले वडयाईआ। किस नहावण तीर्थ ताट, सर सरोवर सोभा पाईआ । किस दी करन याद, किस दा नाम सालाहीआ। किस

तों मंगण दाद, झोली किथ्थे डाहीआ। किस खेड़े होण आबाद, मैनूं दे सुणाईआ। की सुणन अगम्मी आवाज़, कवण करे पढ़ाईआ। किस तऱा खुल्ह राज़, पड़दा उहला रहे ना राईआ। की पूजा करन पाठ, कवण साज नाल खड़काईआ। की सजद्यां विच्च पढ़न निमाज़, रोज़े रक्ख के आस रखाईआ। की जंगलां विच्च करन तलाश, टिल्ले परबत फोल फुलाईआ। की मथ्थे टेकण मन्दर मस्जिद माठ, शिवदवाले नक्क रगढ़ाईआ। की धूणीआं तावण काठ, अगनी ख़ाक रमाईआ। की भज्जण आठ साठ, बण बण पान्धी राहीआ। की जागण उठ के रात, माला मणकिआं वाली भवाईआ। की किसे कोलों पुच्छण बात, प्रभ दा राह तकाईआ। की ओन्हां दी होवे जात, मज़्हब देणा दरसाईआ। की धूढ़ी लौण मस्तक ख़ाक, टिक्के जगत वखाईआ। केहड़ी मंज़ल चढ़्न घाट, किस दवारे सीस निवाईआ। की ढोले गावण बण के भाट, भट्टां वाला रूप वटाईआ। किस बिध पूरी करन ख़ाहश, तृष्ना जगत बुझाईआ। किस बिध लेखे लावण स्वास, साह साह धिआईआ। की जपजी पढ़न रहरास, सोहलिआं विच्च समाईआ। की आसा रक्खण किसे उत्ते कताब, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान बाणी सिफ्तां वाली सोभा पाईआ। किस प्रेम दी वजावण रबाब, तन्द सतार हिलाईआ। की पीवण हयात आब, प्रेम रस चखाईआ। किस बिध लैण आपणा स्वाद, अन्तर प्रेम वधाईआ। किस नूं कहण गाड, खुदा वाहिगुरू अल्ला कह के किस दा नाम धिआईआ। की तेरा वेखण बाज़, कलगी तोड़ा अक्ख टिकाईआ। किस बिध दरगाह दा लभ्भण राज, पिछला पन्ध मुकाईआ। की लेखा लिख के गया भारद्वाज, सत्तां रिखीआं विच्चों ध्यान लगाईआ। की मनसा रक्खी भसुंड काग, एह वी दे सुणाईआ। केहड़ा गज नूं दस्सया जाप, तन्दूआ तन्द कटाईआ। किस बिध प्रहिलाद कोल आया साख्यात, नर सिँघ रूप वटाईआ। किस बिध धरू दा बणया बाप, बाल अंञाणा गोद उठाईआ। किस बिध बल दा दित्ता साथ, वेस अनेकां रूप वटाईआ। किस बिध जनक दी पुच्छी वात, ज्ञान दृष्टी इक्क वखाईआ। किस बिध बिदर दा खाधा साग, सुदामे तन्दलां भोग लगाईआ। किस बिध नामदेव दा पूरा कीता जाप, किस बिध तारया सैण नाईआ। किस बिध जुलाहे दा ताणा बुणिआ आप, कबीर काया कबर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। किस बिध रविदास चुमारा उच्चा कीता विच्चों नीची जात, पाणा गढ्ढं के खुशी वखाईआ। किस बिध नामे कीतां भाग सुभाग, छप्पर छन्न छुहाईआ। केहड़ा धन्ने खोल्लया राज़, पड़दा दे चुकाईआ। किस बिध गनका मार आवाज़, सोई दित्ती उठाईआ। जुग चौकड़ी कीता खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाईआ। किस बिध कलिजुग अन्त आपणा देवें साथ, सगला संग बणाईआ। की गुरमुखां देवें दात, लहणा देणा झोली पाईआ। किस बिध भगत सुहेलयां खुल्ले ताक, पड़दा लैण चुकाईआ। की उह सांधा सन्तां दे बणन चाक, पीरां पिच्छे फेरीआं पाईआ। की उह ग्रंथां नूं लैण वाच, वाचक हो के खोज खुजाईआ। की उह खोजण विच्च प्रभास, फिरन वाहो दाहीआ। की उह दीनां मज़्बां विच्च तेरी लभ्भण जात, एह वी देणा दृढ़ाईआ।

गोबिन्द किहा बिआस सभ बिरथा खेल तमाश, पृथ्मी दए दुहाईआ। की करेगा पूजा पाठ, की करेगा तीर्थ ताट, की करेगा पुस्तक कताब, की करेगा वजाया रबाब, की

करेगा गाया गाथ, जिन्हां चिर सतिगुर शब्द ना साथ रखाईआ। ओस वेले पुरख अकाल होवे मेरा बाप, मैं ओस दे नाल आवां आप, कोट जन्म दिआं विछड़यां मेट के पाप, पुन सराफां तों कर के पाक, आपणी मिला के साची जात, पारब्रह्म ब्रह्म दा दे के जाप, मेहर नज़र नाल मेहरवान हो के अन्तम अन्त भगवन्त विच्च मिलाईआ।

(१६ मध्घर शै सं २ गुरमीत सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

गोबिन्द किहा बिआस कलिजुग अन्त दा दस्सां सीन, सीन शीन जिस नूं समझ कोई ना पाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई कमीन, बुद्ध बिबेक ना कोई रखाईआ। वासना होए मलीन, ख़ाहश कूड़ वडयाईआ। राओ रंक होवे ग़मगीन, हिरदे खुशी ना कोई बणाईआ। झगढ़ा पवे नर मदीन, दोहां करे ना कोई सफ़ाईआ। ओस वेले पुरख अकाल दीन दयाल लेखा जाणे आप महीन, मेहरवान धुर दा माहीआ। जन भगत उठाए जो सज्जण कदीम, कदमां दे नाल मिलाईआ। साची दे ताअलीम, आत्म परमात्म दए समझाईआ। धुर दा दे यकीन, इष्ट देव इक्क वखाईआ। चाढ़ के रंग नवीन, नवां जन्म दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया लवे छीन, माया ममता मोह मिटाईआ। सच्च प्रेम विच्च करे लीन, लिव अन्तर दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगत दए रंगाईआ।

बिआस किहा की भगत गुर दर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ रक्खण ओट, तीर्थ तट्ट ध्यान लगाईआ। केहड़ी जात पात चंगी सोहणी गोत, वरन बरन केहड़ा दीन वडयाईआ। केहड़े इष्ट दी करन सोच, किस अवतार पैगम्बर गुरू नाल नाता लैण जुड़ाईआ। किस दी याद करन रोज़, सुबाह शाम ढोला गाईआ। किस दा वेखण चोज, किस दा राह तकाईआ। केहड़ा धारन जोग, कवण रंग वखाईआ। केहड़ा भोगण भोग, एह देणा समझाईआ। किस नाल होवे संजोग, नाता मात बणाईआ। किस नाल होवे विजोग, विछड़ खुशी वखाईआ। किस दा दर्शन करन अमोघ, अमृत रस चवाईआ। की खाणा होवे भोज, भोजन मिले वडयाईआ। केहड़ी खुशी विच्च मानण मौज, आपणा आप परचाईआ। किस बिध पैंडा मुकावण लोक परलोक, लक्ख चुरासी डेरा ढाहीआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल आपे करे ओन्हां दी खोज, लक्ख चुरासी विच्चों आपणा मेल मिलाईआ। इक्को नाता जोड़ के निर्मल जोत, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। इक्को शब्द सोहँ सो दे के बहुत, बहुतिआं जापां तों लए बचाईआ। ओन्हां नूं कोई लभ्भणा पए ना पोप, पंडत मुल्ला अक्ख ना कोई मिलाईआ। मैं नाम भंडारा देवां थोक, परचूनां दी गंढु ना कोई खुल्हाईआ। जन्म मरन दा कढु के हरख़ सोग, चिन्ता दिआं गवाईआ। सच्च प्रीती दे के जोग, जुगती दिआं दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के साची मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्च दर देवे माण वडयाईआ।

बिआस किहा की भगतां होवे रंग, रंगत कवण रंगाईआ। की भगतां होवे संग, सगला संग बणाईआ। की भगतां देवे अनन्द, अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। की भगतां पावे गंढ, नाता लए रखाईआ । की भगतां देवे ठंड, अगनी तत्त बुझाईआ। की भगतां मेटे पन्ध, चुरासी फंद कटाईआ। की भगतां दस्से छन्द, आपणा नाम समझाईआ । की भगतां खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी विच्च लगाईआ। की भगतां करे पाबन्द, मरयादा आपणी इक्क जणाईआ । की भगतां अंदर जावे लँघ, जगत वासना डेरा ढाहीआ। की भगतां सेज सुहाए पलंघ, सिँघासण इक्को वेख वखाईआ। की भगतां करे आपणे मानिन्द, भेव अभेदा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बिआस, पुरख अकाल सदा बख़्शंद, बखशिश विच्च आपणे घर वसाईआ।

बिआस किहा किस उत्ते रहमत करे निरगुण धार जोती, जोत अकालण दए वडयाईआ । गोबिन्द किहा आत्मा सारी उस दी गोती, लक्ख चुरासी विच्च समाईआ। उहदा झगढ़ा नहीं सुन्नत बोदी, बोधी जैनी वंड ना कोई वंडाईआ। बुरी नहीं तहमत धोती, जगत लबास ना कोई भरमाईआ। जिन्ना़ं दी अन्तर सुरत उठाई सोती, सुत्तयां लए जगाईआ। ओन्ना़ं दी चढ़ के चोटी, चोट शब्द दए सुणाईआ। कढ्ढे वासना खोटी, खोटिउँ खरे बणाईआ। बिआस, जिन्ना़ं रसना मास ना लाया बोटी, जमकाल बुच्चड़ां तों लए छुडाईआ। धुर दी धार पुरख अकाल भगतां वास्ते सोची, दूसर समझ ना कोई समझाईआ। एसे कारन वड्डिआई दित्ती रविदास चमार मोची, सुक्के टुकड़े खा के झट्ट लंघाईआ। जिस नूं गौंदे लोक परलोकी, पुरख अकाल ओसे दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पढ़ाए आपणे नाम दी अगम्मी नाम वाली पोथी, पोथी पुस्तक छापेखाने वाली सफ़िआं विच्च ना कोई वखाईआ।

(१६ मध्घर शै सं २ बीबी चरन कौर)

* * * * *
* * * * *

बिआस किहा गोबिन्द कलिजुग अन्त भगतां दी केहड़ी होवे कौम, किआमत तों कौण बचाईआ । किस दी गोद बहि के सौण, सिँघासण कवण वडयाईआ। की उह अगनी पूजण कि पौण, की शास्त्रां ओट रखाईआ। की ठाकर मन्नण कि ओम, किस नूं सीस झुकाईआ। की वाहिगुरू अल्ला राम कृष्न गौण, किस दी जैकार सुणाईआ। केहड़ा ईशण देव मनौण, सच्च देणा समझाईआ। किस दे अग्गे भोग लगौण, स्वार्थ आपणा पूर कराईआ। किस दी पूजा कर के झट्ट लंघौण, जीवण सफल कराईआ। की ठाकर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ सिर झुकौण, गुरूदवार ख़ाक रमाईआ। की शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाणी पढ़ के मन परचौण, पर्चा जीवण वाला पाईआ। की अठसठ तीर्थ जा के नहौण, गंगा गोदावरी जमना सुरसती खोज खुजाईआ। की पुंन दान करौण, की भेटा जगत गोसांईआ ।

गोबिन्द किहा दीन दुनी दे नाते सर्ब तजौण, छुट्टे कूड़ लोकाईआ। इक्को पुरख अकाल मनौण, जिस ने सारे इष्ट दित्ते प्रगटाईआ। ओसे दी महिंमा कर के सारे झट्ट लंघौण, बिना पुरख अकाल शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तीर्थ तट्ट किनार गुर अवतार पैगम्बर कम्म किसे ना आईआ। एह सारे ओसे दा निशान, जिस ने रचना रची दो जहान, खेल खला ज़िमीं असमान, रव सस कर प्रधान, विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, परमात्म आत्म दे के दान, त्रै पंज खेल खेल महान, लक्ख चुरासी जेरज अंड उत्भज सेतज रचन दित्ती रचाईआ। ओनां संदेशा देवे नौजवान, आदि जुगादी मर्द मरदान, दो जहानां निगाहबान, निरवैर निराकार निरँकार आपणी दया कमाईआ। बिआस, साचा नाअरा दस्स के ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"", आवण जावण लेखे मुका के तमाम, निरगुण नवां नूर मिले अमाम, मानस जन्म दा सफल होवे काम, चरन धूढ़ी इक्को वार करा इशनान, मेहर नाल दे ज्ञान, अन्ध अज्ञान अंदरों दए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिनां नूं आपणे दर करे परवान, तिनां दा लेखा होर रहे ना राईआ। (१६ मध्घर शै सं २ साधू सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस किहा कलिजुग अन्त भगत केहड़ी नहावण गंग, गंगोतरी दे समझाईआ। किस दवारे मारन पन्ध, सफ़री सफ़र वरवाईआ। किस दा माणण अनन्द, पुरी अनन्द वाले दे दृढ़ाईआ। केहड़ा तरीका करन ढंग, रस्ता लैण अपणाईआ। केहड़ा पड़दा कज्जे नंग, ओढ्ढण सीस टिकाईआ। केहड़ा युद्ध करन जंग, शस्त्र कवण उठाईआ। केहड़ा वजावण मरदंग, नगारा डंक छुहाईआ। केहड़ा लभ्भण संग, अगला संग बणाईआ। केहड़ा कसण तंग, पाखर असव ज़ीन सुहाईआ। किस दे होण पाबन्द, चल्लण सच्च रज़ाईआ। किस बिध पावण ठंड, तीर्थ कवण नुहाईआ। टुट्टी लैण गंढ, नाता आप जुड़ाईआ। भेव खुल्हे ब्रह्म, पड़दा चुक्के बेपरवाहीआ। सुखाले होवण दम, साह सवास विच्च समाईआ। मिटे चिन्ता ग़म, हरख सोग डेरा ढाईआ। भंडारा मिले धन, नाम अगम्म अथाहीआ। चमके नूरी चन्न, जोत होवे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा बिआस जे इक्को मेरा हुक्म लैण मन्न, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरी धारों पैण जम्म, पिता पुरख अकाल दिआं वरवाईआ। दो जहानां चाढ़ के चन्न, गुरमुखां करां रुशनाईआ। भगत उधारना मेरा कम्म, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क समझाईआ।

बिआस किहा उह दवारे कीहदे झुकण, सीस किस निवाईआ। किसदे कोलों पुच्छण, किथ्थे मिले बेपरवाहीआ। किस नूं सुणावण दुक्खण, कवण ददी दर्द वंडाईआ। किस बिध कूड़ कुड़िआरी जड़ पुट्टण, अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। जगत वासना कूड़ी बाहर थुक्कण,

अंदर विख ना कोई चढ़ाईआ। मनूआं खेल ना करे फफ्फे कुट्टण, तृष्ना तृप्त वखाईआ। किस बिध पैंडा ओन्हां आवे मुक्कण, झगढ़ा मुक्के लोकाईआ। गोबिन्द किहा बिआस जे इक्को मेरे बण जाण सुतण, मेरा सुत अपराध ना कोई कमाईआ। आपे गोदी आवां चुक्कण, कोझे कमलयां गले लगाईआ। दरगाह साची आवां सुट्टण, जिथ्थे बैठा बेपरवाहीआ। सोहणी सुहावां रुत्तण, रुत्तड़ी इक्क महकाईआ। जेहड़े एस निशानउँ उक्कण, अगले लेखे दी समझ रहे ना राईआ। शब्दी धार नालों टुट्टण, टुट्टया ना कोई जुड़ाईआ। जन भगतां हुक्में अंदर दे के धुर दा सुखण, बचन कौल आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे आपणी दया विच्च रखाईआ।

(१६ मध्घर शै सं २ महिंदर सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस किहा गोबिन्द कलिजुग अन्त भगतां दी की पहिचाण, गुरमुखां दा लेख दे समझाईआ। किस दा करन ध्यान, इष्ट कवण मनाईआ। किस दा सुणन ज्ञान, कवण सच्च पढ़ाईआ। किस दा रक्खण माण, किस दी गोद सुहाईआ। किस तों मंगण दान, किस अग्गे झोली डाहीआ। किस तों लैण अमृत पीण खाण, किस दवारे रस चवाईआ। किस दा ढोला गीत गाण, किस दे अग्गे सीस निवाईआ। किस दे चरन करन प्रनाम, बन्दना डण्डावत केहड़ी थाईंआ। किस दे होण ग़ुलाम, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। किस दा सुणन पैग़ाम, किस दी चलण रज़ाईआ ?

गोबिन्द किहा बिआस उठ वेख निशान, निशाना दिआं वखाईआ। उह शब्द अगम्मी सुणन ज्ञान, चार जुग तों वक्खरी करन पढ़ाईआ। इक्को इष्ट मन्नण श्री भगवान, जो सभ दा पिता माईआ। सच्च प्रीती अमृत रस पीण खाण, दूजी तृष्ना ना कोई वधाईआ। सचखण्ड निवासी कर परवान, लेखा सभ दा दए लगाईआ। उन्हां ने ढोला गौणा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग आपणा लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ।

(१६ मध्घर शै सं २ माई भागो)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस किहा उन्हां दी कवण जाणे मित गत्त, कवण देवे वडयाईआ। कवण समझावे ब्रह्म मत, ब्रह्म पड़दा कवण उठाईआ। कवण भाग लगावे पंज तत्त, तत्तव दए दृढ़ाईआ। कवण रंग रंगाए आपणी रत्त, लाल गुलाला दए चढ़ाईआ। कवण मार्ग दस्से सच्च, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। कवण सुहाए काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए बणाईआ। कवण देवे

अमृत रस, बिन रसना दए चखाईआ। कवण मनुआ करे वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। कवण खोल्हे अंदरों अक्ख, निझ नेत्र कर रुशनाईआ। कवण पड़दा देवे ढक्क, ओढण सीस टिकाईआ। कवण लक्ख चुरासी विच्चों लवे कढ्ढ, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। कवण सच्च दवारे लए सद्द, दरगाह साची धाम वखाईआ। कवण हकीकत देवे हक़, पूरब लेखा झोली पाईआ। कवण मेल मिलाए नढ्ढ नढ्ढ, भज्जे वाहो दाहीआ। कवण ऊँचां नीचां खोल्हे इक्को हट्ट, सच्च दवारा दए वखाईआ। कवण शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश दीन मज़्हब खेड़ा करे भट्ठ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ।

गोबिन्द किहा बिआस एह मेहर करे पुरख समरथ, दीन दयाल दया कमाईआ। इक्को दे के आपणा जस, सारीआं सिफ्तां ओसे विच्च समाईआ। नाम दा खोल्ह के हट्ट, वस्त दए वरताईआ। इक्ठे कर चार वरन इक्क दवारे लए सद्द, दर दरबारा इक्क वखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दस्स के छन्द, बन्द बन्द बन्दगी लेखे लाईआ। अग्गे दे के सचखण्ड दा अनन्द, जोती जोत जोत विच्च मिलाईआ। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। भगत उधारना ओस कोल निराला ढंग, जुग चौकड़ी लए बदलाईआ। कलिजुग अन्त हो बख्शंद, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, धुर दा बणा के संग, संगी हो के सगला संग निभाईआ।

(१६ मध्घर शहनशाही सम्मत २ केहर सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

बिआस कहे प्रभ बख्श अगम्मी सति, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह उपजा ब्रह्म मत, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सति धर्म जुड़ा साचा नत्त, नाता कूड़ कुड़िआर रहण ना पाईआ। निरवैर हो के निराकार हो के निरँकार हो के खेल कर पुरख समरथ, महिंमां अकथ्थ आप जणाईआ। तेरी आत्म परमात्म तैथों होई वक्ख, जुग जन्म दे विछड़े लै मिलाईआ। सच्च दवारा एकंकारा खोल्ह आपणा हट्ट, शब्द भंडारा धुर दरबारे दे वरताईआ। निरगुण हो के चार अठारां बरन चार कुण्ट आपणी धार नढ्ढ, दिवस रैण अठ्ठे पहिर धुर दी सेव कमाईआ। दुरमत मैल जो अठ्ठ सठ्ठ रही फैल शब्द सतिगुर हो के कट्ट, काया कुटीआ अंदर घर घर कर सफ़ाईआ। तन वजूद हक़ महिबूब वखा साचा तट्ट, सर सरोवर इक्को इक्क प्रगटाईआ। मन विकार हउमे हँकार गढ़ कूड़ कुड़िआर जाए ढठ्ठ, लोभ मोह हँकार रहण कोई ना पाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण रक्ख, गोबिन्द हो के आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुहेले इक्क इकेले सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी ओट इक्क तकाईआ।

तेरी ओट रक्खी अकाल, अकल कलधारी वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई बेहाल, बेवा रूप होवे खुदाईआ। साचा मिले ना किसे जलाल, जल्वा नूर ना कोई रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा लेखे लग्गे किसे ना घाल, कीती घाल थांए कोई ना पाईआ। दुनियां अंदर दुनी दार होए कंगाल, नाम वणजारा साचा वणज ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुखीआं दर्द वेख आण, छुरी करद शरअ बणी कसाईआ।

शरअ कहे मेरा कलिजुग अन्त फ़तूर, फ़तवा सभ ते दित्ता लाईआ। घर घर बणा के गढ़ गरूर, हँकार दित्ता प्रगटाईआ। नाता जोड़ के कुड़िआर कूड़, कुटंब मूढ़ दित्ता वखाईआ। किसे दे अन्तर निरंतर उपजे ना नाम तूर, तुरीआ दी मंज़ल हक़ ना कोई वखाईआ। समरथ पुरख तों सारे होए दूर, करवट सके ना कोई बदलाईआ। साहिब सतिगुर देवे ना किसे धूढ़, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। निरगुण धार आत्म जोती वेखे कोई ना नूर, वरन गोती झगढ़ा पिआ लोकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण निरवैर निराकार किरपा कर हाज़र हज़ूर, हज़रत स्वामी हो के अन्तरजामी आपणा पड़दा दे उठाईआ।

अन्तरजामी पुरख बिधाते, तेरी इक्क सरनाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया तोड़ नाते, सच्च सुच्च मेल मिलाईआ। चौथे जुग दे वेख अन्तम खाते, सदी बीसवीं खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लिख के गए गाथे, कलम शाही कागज़ जोड़ जुड़ाईआ। प्रगट हो पुरख समराथे, पड़दा उहला दे चुकाईआ। तेरा शब्द कोई ना वाचे, वाचक ज्ञान रिहा कुरलाईआ। मानस जन्म होवे ना किसे रासे, रस्ते चल के तेरा दरस कोई ना पाईआ। मेहरवान हो पुरख अबिनाशे, अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्तम मेट वाटे, वट्टा लग्गा नाम खुदाईआ। सति धर्म चला साचा राथे, धुर दा हुक्म आप दृढ़ाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त मेल मिला आपणे सन्त गुरमुखां पूरे कर घाटे, किसे दी मंज़ल रहे ना अद्धवाटे, चरन कँवल उप्पर धवल साहिब सतिगुर पुरख अगम्म एकंकार इक्को बख्श हक़ सरनाईआ। (१७ मध्घर शहनशाही सम्मत २ प्रकाश सिँघ)

* * * * *
* * * * *

बिआस कहे गोबिन्द दे के गया संदेशा, सदीआं दा पहले भेव चुकाईआ। कलिजुग अन्त खेले खेल नर नरेशा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म चले आदि जुगादि जुग चौकड़ी हमेशा, गुर अवतार पैगम्बर सके ना कोई उलटाईआ। सीस झुकौंदे ब्रह्मा विष्न शिव गणपत गणेशा, देवत सुर ध्यान लगाईआ। पैगम्बर सजद्यां विच्च करन आदेसा, ख़ाक कदमां धूड़ रमाईआ। सो जुग चौकड़ी नित्त नवित्त बदले आपणा भेसा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत नबेड़नहारा

लेखा, ब्रह्मण्ड खण्ड लहणा देणा दए चुकाईआ। दो जहानां बण के आवे नेता, नर निरँकार सच्चा शहनशाहीआ। जिस नूं सारे करन आदेशा, डण्डावत नमस्ते विच्च सीस झुकाईआ। सो वेख वखाणे लोकमात परदेसा, पड़दिआं तों पड़्हे आपणी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर दया कमाईआ।

निरगुण निरवैर आपे आप, प्रभ कल कलकी नाउँ धराईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी शब्दी शाख़, जोत धार रुशनाईआ। नित्त नवित्त दस्से अगम्मा पाठ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान बाणी जिस दी महिंमा वाली गौंदी गाथ, ढोले सिफ्तां वाले सुणाईआ। सो खेल खिलाए पुरख समरथ, स्वामी अन्तरजामी पड़दा आपणा दए उठाईआ। करना करौणा जिस दे सभ कुछ हत्थ, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। निरगुण धार होवे प्रगट, जोती जाता वड्ड वडयाईआ। चार वरन अठारां बरन खोल्हे इक्को हट्ट, नाम निधान श्री भगवान दए वरताईआ। जन भगतां निझ नेत्र खोल्ह अगम्मी अक्ख, लोचन धुर दे करे रुशनाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। दीन दुनी नालों कर के वक्ख, वक्खरा धाम इक्क वखाईआ। जिस गृह दीपक जोत जगे लट्ट लट्ट, अन्ध अन्धेर ना कोई वखाईआ। शब्द सुणा अगम्मी अनहद, नादी नाद दए जणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता अन्त होवे प्रगट, कन्त सुहागी वेस वटाईआ।

कन्त सुहागी आवे एक, एकंकार वड्डी वडयाईआ। जन भगतां बख्शे टेक, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया करे खेत, सच्च सुच्च इक्क समझाईआ। दरस वखावे नेतन नेत, निझ नैण अक्ख खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए वेख, वेखणहारा पड़दा लाहीआ। जन्म जन्म दी बदल देवे रेख, लेखा आपणे हत्थ वखाईआ। जिस दी याद कर के गिआ गोबिन्द दस दस्मेश, शब्द तरानिआं विच्च गाईआ। सो धार अव्वलड़ा वेस, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सम्बल वसे अगम्मे देस, जिस नगरी दी वंड ना कोई कराईआ। मुच्छ दाहड़ी ना कोई केस, जोती जाता बेपरवाहीआ। जन भगतां करे सदा हेत, हितकारी धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले रक्खे धुर दी साया हेठ, कलिजुग अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। (१७ मध्घर शहनशाही सम्मत २ सन्तोख सिँघ)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳